यीशु के आने से पूर्व लोग परमेश्वर की उपासना करते थे

प्रार्थना: प्रिय प्रभु इस अध्ययन के द्वारा बच्चे आपकी उपासना सच्चे हृदय से करना सीख सकें। आमीन।

2 इतिहास अध्याय 5, से किसी युवा बच्चे द्वारा यह बताने या पढ़ने को कहें कि प्राचीन इस्राएल द्वारा नये मंदिर में परमेश्वर की उपासना किस रीति से की जाती थी।

तत्पश्चात् निम्न प्रश्न पूछिए :

- पवित्र पर्व पर येरूशलेम में राजा सुलैमान ने किन लोगों को आने का निमंत्रण दिया? (पद 3)
- उन्होंने किसका बलिदान चढ़ाया? (पद 6)
- करूबों के पंखों तले कौन का परमपवित्र स्थान था? (पद 7)
- वाचा के संदूक में कौन सी वस्तु थी? (पद 10)

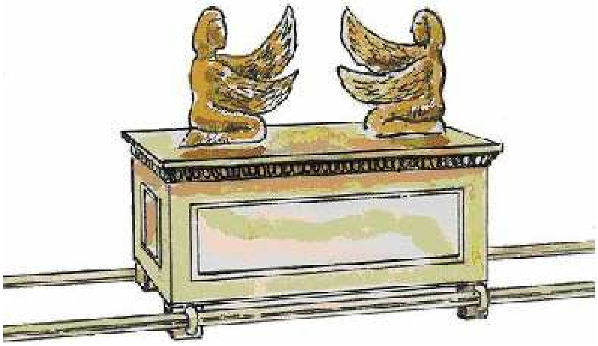

- याजक और लेवी किस प्रकार से परमेश्वर की स्तुति करते थे? (पद 12 व 13)
- जब मंदिर में स्तुति की जाती थी तब वहां क्या भर गया था? (पद 13)

समझाएं कि यीशु के आने पर जब पवित्रात्मा भेजा गया कि वह हमारे जीवनों में निवास करे तब से परमेश्वर की उपस्थिति एक इमारत में नहीं, परन्तु प्रत्येक विश्वासी के हृदयों में उसकी उपस्थिति विद्यमान है। पशुओं का बलिदान प्रभु यीशु के बलिदान की ओर संकेत करता है। आजकल हम पशुओं के बलिदान नहीं चढ़ाते हैं क्योंकि प्रभु यीशु परमेश्वर का वह मेम्ना है जो हमारे पाप उठा ले जाता है।

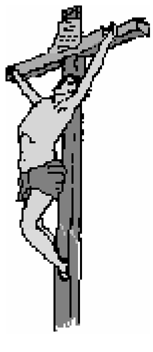

गतिविधियाँ :

प्राचीन इस्राएली लोग परमेश्वर की आराधना किस प्रकार किया करते थे, बच्चे उन विधियों को बताएं। प्राचीन आराधना विधि की तुलना वर्तमान समय की आराधना-विधि से कीजिये। उदाहरण :

- इस्राएलियों के पास ईट-पत्थर का बना मंदिर था पर आज हम कहीं भी उसकी उपासना कर सकते हैं।
- वाचा का संदूक इस्राएलियों के लिये परमेश्वर की उपस्थिति का प्रतीक था, पर आज वह हम में रहता है।
- इस्राएली पशु का बलिदान करते थे, पर आज प्रभु-भोज में हमारे पास यीशु की देह है।

- इस्राएली भेंट व संगीत द्वारा प्रभु की स्तुति करते थे, हम भी आज ऐसा ही करते हैं।
- इस्राएली उपासना में मूर्तियां तथा जादू-टोना दूर रखते थे, हम भी इन्हें दूर रखते हैं।

नाटक

2 इतिहास 5 पर आधारित मंदिर के समर्पण पर एक नाटक प्रस्तुत कीजिये :

- अराधना के अगुवे के सहयोग से बच्चों को नाटक या उसके अंश प्रस्तुत करने का प्रबंध कीजिए।
- नाटक तैयार करने में बड़े बच्चे छोटों की सहायता करें।
- छोटे चार बच्चों को याजक व लेवियों की भूमिका दीजिये।
- बड़े बच्चे या युवा बच्चे, सुलैमान, लड़की, माता-पिता,परमेश्वर की आवाज और उद्घोषक की भूमिका करें।

उद्घोषक: 2 इतिहास 5 की कहानी का सारांश प्रस्तुत करे, उसके बाद यह कहे : सुनों कि छोटी लड़की अपने पिता से क्या पूछ रही है?

लड़की: अपने माता-पिता का हाथ पकड़े चलते हुए कहती है, हम दो दिन से चल रहे हैं, हम कहां जा रहे हैं?

माता-पिता: राजा सुलैमान ने हम सब इस्राएलियों को येरूशलेम में बुलाया है, ताकि जो मंदिर उसने बनवाया है उसका समर्पण किया जाए।

लड़की: देखो, वे पुरोहित सोने का बड़ा सा बक्सा उठाए ले जा रहे हैं।

पुरोहित: वाचा का संदूक उठाने का अभिनय करें, दो बच्चे आगे और दो पीछे चलें । फिर संदूक भूमि पर रखने का अभिनय करें।

माता-पिता: यह वाचा का संदूक है। इसमें दस आज्ञाएं हैं, इसे परमपवित्र स्थान में रखा जाता है, यह हमें परमेश्वर की उपस्थिति का ज्ञान कराता है (आदर से झुक जाते हैं)

लड़की: वे इस बक्से को कब खोलेंगे?

माता-पिता: वे इसे कभी नहीं खोलेंगे, यदि किसी ने बक्से को छुआ भी तो उसे परमेश्वर घात कर देगा।

लेवी: चलते हुए ऐसा अभिनय करें कि तुरहियां व झांझ बजा रहे हों।

लड़की: देखो , संगीतकारों के पास तुरहियां, झांझ और वीणा हैं।

लेवी: ज़ोर से एक साथ गीत गाते हैं, प्रभु की स्तुति हो, उसकी करूणा सदा की है।

लड़की: देखो, परमेश्वर का भवन बादलों से ढंप गया है, पुरोहित चले गये हैं।

लेवी: ऊपर नीचे इधर उधर देखें और अपने हाथ उठाएं और चले जाएं, मानों अन्धे हों ।

माता-पिता: परमेश्वर की महिमा से सारा मंदिर भर गया है, देखो राजा सुलैमान प्रार्थना कर रहा है।

सुलैमानः अपने हाथ स्वर्ग की ओर फैलाए हुए ऊंची आवाज में कहे, 'हे इस्राएल के परमेश्वर, मैंने सदा के लिये तेरे रहने के लिये एक सुन्दर भवन बनवाया है, पर क्या तू सचमुच मनुष्यों के संग पृथ्वी पर वास करेगा? ऊंचे स्वर्ग में भी तू नहीं समाता, फिर यह भवन जो मैंने बनाया है,उसमें तू कैसे समाएगा?

उद्घोषकः परमेश्वर ने स्वर्ग से यूं उत्तर दियाः

परमेश्वर की आवाजः मैंने येरूशलेम को इसलिये चुना है कि मेरा नाम वहां हो, मेरे लोग जो मेरे नाम से कहलाते हैं, यदि वे दीन होकर प्रार्थना करें, और मेरे दर्शन के खोजी हों, और अपने बुरे मार्गो से फिरें, तो मैं स्वर्ग से उनकी सुनूंगा, उनके अपराधों को क्षमा करूंगा और उनके देश को स्वस्थ करूंगा।''

यदि यह नाटक बच्चों ने युवाओं के लिये प्रस्तुत किया है तो उनसे इस अध्ययन में दिए गये प्रश्न उनसे पूछें।

चित्रः बच्चे किसी वाद्य-यन्त्र का चित्र यह समझााने के लिये बनाएं कि हम प्रभु की स्तुति में इन यन्त्रों का प्रयोग किस प्रकार आराधना में कर सकते हैं। आराधना के समय बच्चे युवाओं को चित्र दिखाएं और समझाएं।

कविताः प्रत्येक बालक यशायाह 6:1-4 तक पद मुखाग्र करे :

''जिस वर्ष उज्जियाह राजा मरा,
मैंने प्रभु को बहुत ही उंचे सिंहासन पर विराजमान देखा,
और उसके वस्त्र के घेर से मन्दिर भर गया।
उससे ऊंचे पर साराप दिखाई दिए,जिनके छः छः पंख थे,
दो पंखों से वे अपने मुंह को ढांपे थे और दो से अपने पांवों को,
और दो से उड़ रहे थे।
और वे एक दूसरे से पुकार पुकार कर कह रहे थेः
सेनाओं का प्रभु पवित्र, पवित्र, पवित्र है सारी पृथ्वी उसके तेज से भरपूर है।
और पुकारने वाले के शब्द से डेवढ़ियों की नेवें डोल उठीं, और भवन धुएं से भर गया।''

अति छोटे बच्चे भजनसंहिता 87:3 तथा बड़े बच्चे इब्रानियों 1:1-2 याद करें।

प्रार्थनाः प्रभु आपका धन्यवाद हो कि आपने राजा सुलैमान तथा इस्राएली लोगों पर स्वयं को प्रकट किया। अब यीशु के कारण आप प्रत्येक विश्वासी के मन में रहते हैं, सो हम आनन्द से आपकी स्तुति व प्रशंसा करते हैं। आमीन।